

गणतंत्र दविस: बहिर की झाँकी

चर्चा में क्यों?

गणतंत्र दविस परेड में बहिर की झाँकी में क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक वरासत को प्रदर्शित किया गया, जिसमें प्रतीकात्मक रूप से **प्रतिष्ठित बोधवृक्ष** और प्रसिद्ध **नालंदा विश्वविद्यालय** को दर्शाया गया।

- प्रदर्शन में बहिर की ऐतिहासिक पहचान को 'बुद्ध की भूमि' और प्राचीन ज्ञान के केंद्र के रूप में उजागर किया गया।



मुख्य बिंदु

- **बहिर की झाँकी:**
 - बहिर की झाँकी ने आठ वर्ष के अंतराल के बाद कर्तव्य पथ पर 76वें गणतंत्र दविस परेड में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।
 - झाँकी का केंद्रीय विषय 'स्वर्णमि भारत: वरासत और विकास' था और इसमें प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहरों को प्रमुखता से दिखाया गया था।
 - झाँकी में **भगवान बुद्ध** की ध्यानमग्न धर्मचक्र मुद्रा में स्थापित प्रतिमा को दर्शाया गया, जो शांति और सद्भाव का प्रतीक है। प्रतिमा का मूल स्थान राजगीर में घोड़ा कटोरा जलाशय है।
 - बहिर की झाँकी ने राज्य की ज्ञान और शांति की परंपरा को उजागर किया तथा ज्ञान, मोक्ष और शांति की भूमि के रूप में इसकी ऐतिहासिक पहचान पर जोर दिया गया।
- **ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का चित्रण:**
 - झाँकी में बोधगया के पवित्र बोधवृक्ष, जहाँ भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था और सम्राट कुमारगुप्त द्वारा 427 ई. में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय के प्राचीन खंडहरों का चित्रण शामिल था।
 - झाँकी ने विश्व के पहले आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय की भूमिका पर जोर दिया, जो ज्ञान का वैश्विक केंद्र था, जो चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत और अन्य स्थानों से विद्वानों को आकर्षित करता था।
- **भक्ति चित्र और आधुनिक नवाचार:**
 - झाँकी के पार्श्व पैनल पर भक्तिचित्रों में **चंद्रगुप्त मौर्य** के मार्गदर्शक **चाणक्य** के योगदान को दर्शाया गया है तथा प्राचीन वैदिक सभाओं के दृश्यों को दर्शाया गया है, जिसमें लोकतांत्रिक शासन और न्यायिक प्रणालियों को दर्शाया गया।

- एक अन्य भित्तिचित्र में 'गुरु-शषिय' परंपरा तथा गणति में आर्यभट्ट के योगदान पर प्रकाश डाला गया।
- एक LED स्क्रीन पर नवनरिमति नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय परिसर को प्रदर्शित किया गया, जसै कार्बन-तटस्थ और शुद्ध-शून्य स्तरिता लक्ष्यों के साथ डिज़ाइन किया गया है, जो आधुनिक शैक्षिक प्रगति को दर्शाता है।



गौतम बुद्ध

इन्हें भगवान विष्णु के 10 अवतारों (दशावतार) में से 8वाँ अवतार माना जाता है

जन्म

- सिद्धार्थ के रूप में जन्म (563 ईसा पूर्व)
- जन्मस्थान- लुम्बिनी (नेपाल)
कपिलवस्तु के निकट

माता-पिता

- पिता- कपिलवस्तु के निर्वाचित शासक;
शाक्य गणसंघ के मुखिया
- माता - कोशल वंश की राजकुमारी



महत्त्वपूर्ण घटनाएँ



बुद्ध का जन्म



गृह त्याग/महान प्रस्थान
(महाभिनिष्क्रमण)



ज्ञान की प्राप्ति (निर्वाण)



प्रथम उपदेश
(धम्मचक्रपरिवर्तन)



मृत्यु (महापरिनिर्वाण)

बुद्ध ने स्वयं को तथागत (वह जो जैसा आया था, वैसा ही चला गया) के रूप में संदर्भित किया और बौद्ध ग्रंथों में इन्हें भागवत के रूप में संबोधित किया गया है।

समकालीन व्यक्ति

- वर्धमान महावीर
- बिम्बिसार
- अजातशत्रु

बुद्ध से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

- बोधगया (ज्ञान प्राप्ति) (ज्ञान प्राप्ति के बाद वे बुद्ध के नाम से जाने गए)
- सारनाथ (प्रथम उपदेश)
- वैशाली (अंतिम उपदेश)
- कुशीनगर (मृत्यु (487 ई.पू.) का स्थान)